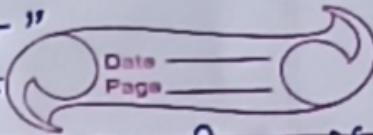


"रीतिकाल की साधित काव्य धाराएँ"



रीतिकालीन काव्य की सूचनाः तीन कर्गों में विभक्त किया गया है, जो तीन धाराएँ हैं—

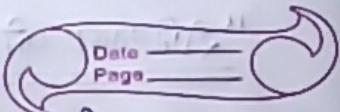
- (i) रीतिबहु काव्य
- (ii) रीतिसिद्ध काव्य
- (iii) रीतिमुक्त काव्य

रीतिबहु काव्य —

रीतिकाल के ने कवि

जिन्होंने लक्षण ग्रन्थों की परिपाठी पर कामांगों का लक्षण रखे उदाहरण देते हुए वीति ग्रन्थों की स्वना की, रीतिबहु कवि कहत्याएँ। अपने समकालीन राजाओं के आश्रय में स्वना करने वाले रीतिकाल में ऐसे संकड़ों कवि हुए जिन्होंने आचार्य बनने के लिए लक्षण ग्रन्थों की स्वना की। इन सभी कवियों द्वारा किया गया रीति निरूपण रूकांगी, अधूरा एवं अपरिपक्व है। इसीलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ऐसे कवियों के रीति ग्रन्थों पर टिप्पणी करते हुए लिया है— “इन रीति ग्रन्थों के कर्ता भावुक चक्षुव्य और निषुण कवि भौ। उनका उद्देश्य कविता करना भा, न कि कामांगों का वास्त्रीप पृष्ठति पर निरूपण करना। हिन्दी में लक्षण ग्रन्थों की परिपाठी पर स्वना करने वाले जो संकड़ों कवि हुए वे आचार्य कोटि में नहीं आ सकते। के वास्तव में कवि ही चै।”

रीतिबहु कवियों का प्रमुख उद्देश्य अपनी कव्य प्रतिमा का परिचय देना वा। अतः वे लक्षणों पर अना ध्यान नहीं देते जिन्होंने उदाहरणों पर हिमा मधी कारण है कि इनके द्वारा



द्विं गरु काव्यों के लक्षण 'अपर्माप्त' हैं असंगत हैं। रीतिकाल के 'शुद्ध' रीतिवृत्त का हैं उनके गुन्य छूस प्रकार हैं—

चिन्हामणि— काव्य विवेक, कवितुल कल्यतर, सुंगार मंजी
मतिराज— रसराज, अलंकार पंचाहिका, लालित ललाभ, वृत्त
कोशुदी, सतसद्द।

शूषण— शिवराज शूषण, अलंकार प्रकाश, हन्दोच्चर्य, प्रकाश,
शिना बावनी, दृश्यसाल दृश्य।

कुलपति मिथ्य— रस रहस्य, नर्यधिक्ष, दुर्गा भासि तरंगिनी

महान— रस रत्नावली, रस निलास, नैना पचासा, काव्य रत्न।

देव— मातृ विलास, अवनी विलास, रस निलास, काव्य रसायन

पद्मालर— जगत विनोद, पद्माभरण, प्रतापसिंह विनादानली
प्रबोध पचासा, गांगा लहरी।

गवाल कवि— नर्ख विष्य, अलंकार श्रम भंजन, रस रूप,
कवि दर्पण।

मिरखारी लाल— काव्य निर्णय, सुंगार निर्णय, रस सारांश,
हन्दानीव पिंगल, हन्द एकावा।

रसलीन— अंग दर्पण, रस प्रबोध।

द्विजदेव— सुंगार लतिका, सुंगार वातिसी, कवि कल्यद्मुक।

द्रुलह— कवितुल कण्ठाभरण।

जयवन्त सिंह— श्यामाकृष्णण, आनन्द विलास, सिंहात
कोष्य, अनुभव प्रकाश।

डोप— रामचन्द्राभरण, रामचन्द्र शूषण, रामालंकार।

सोमनाथ— रस पिघुष निधि, सुंगार निलास, श्रेम
पचीसी। आदि। इन कवियों ने

सामान्य पाठकों को कव्यशास्त्र का समान्य ज्ञान कराने
के उद्देश्य से रीतिशूल प्रियों लिखे, जिनमें मोलिका का

निनाम अभाव है, क्योंकि ये सारे गृह्ण श्वेत
नामशाहम् को 'आधार' बनाकर लिखे गए। संस्कृत
में कहा जा सकता है कि हिन्दी में नामशाहम् का
द्वार खोलने का श्रेय इन वीतिष्ठ वीतिग्रन्थकार
कविमों को 'अवश्य' दिया जा सकता है।
वीतिसिद्ध काव्य —

रीतिविद्ध कविमों के कर्ता ऐं
उन कवियों की गणना की जाती है, जिन्होंने
ग्रन्थपि कोई रीतिग्रन्थ नहीं लिखा, तथापि रीति की
उन्हें अच्छी जानकारी थी, जिसका उपयोग करते
हुए उन्होंने अपने काव्य गृह्णों की स्चना की।
ये 'शीति' में पारंगत भा लिह करि चै, इसलिए
इन्हें रीतिसिद्ध करते रहा गया। कह कर्ता के प्रतिनिधि
कवि लिहारी हैं। विदारी ने ग्रन्थपि कोई रीति गृह्ण
नहीं लिखा तथापि उन्होंने अपनी रुचमास स्चना
'सतसई', में रीति की जानकारी का घरा-घरा उपयोग
किया है। हाव-अनुभाव भौजना की दृष्टि से
लिहारी सतसई एक उल्लेखनीय कृति है। भाषा
की समास वाक्ति इन कल्पना नहीं समाधार शास्त्रि
के बल पर ही लिहारी दोहे जैसे छोटे छन्द में
इतने भावों के समावेश कर सकते हैं।

रीतिमुक्त काव्य —

रीतिकाल के के कोने
जो 'रीति' के बन्धन से छुपा है —
रीतिमुक्त कवि कहे जाते हैं। इन्होंने न तो
लक्षण ग्रन्थ लिये उगेर न रीति की जानकारी का
उपयोग अपने काव्य में किया, अपितु इन कविमों

ने कव्य की स्वतंत्र वृत्तियों को अपने काव्य में निरूपित किया। यही उनके बन्धन से मुक्त होने के कारण ही इन्हें रीतिमुक्त कवि कहा गया। इन कवियों में प्रमुख हैं — घनानन्द, बोधा, आलम, छाकुर आदि। रीतिमुक्त कवियों को अनेक तरों में विभक्त किया गया है, जैसे — रीतिमुक्त शृंगारी कवि, रीतिमुक्त पुकारकार कवि, रीतिमुक्त झूकिकार कवि, रीतिमुक्त फुटकल कवि आदि।

रीतिमुक्त शृंगारी कवियों में स्वरूप ऐसे कवियों का विषय करने वाले कवि घनानन्द, बोधा, आलम और छाकुर के नाम लिख जा सकते हैं। रीतिमुक्त पुकारकार कवियों में लाल कवि (हन्त्र प्रकाश), सूरज (सुजान चौहान), सबल सिंह — ठोंडान (मद्यभास) आदि को रखा जाता है। जबकि रीतिमुक्त सूर्यस्त्रिकार कवियों में वृन्द, गिरप्परकाश, घाघ, वेलाल जैसे कवियों की गाना की जाती है। रीतिमुक्त कवियों की पूष्टि मुक्तक द्वचना की विधि नहीं है। इन कवियों ने लाक्षणिक वृजभाषा का प्रयोग किया है, जिसमें आप घोंजना की अपूर्ण धमता है। निश्चय दीर्घीतिमुक्त कवियों के प्रदेश ने हिन्दी साहित्य की पर्याप्त श्री हाउस की है।